Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

# डॉ. भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व एवं कृतिव

**Devender Kumar***

Research Scholar, VPO-PUR, Bhiwani

*सारांश – किसी भी महान् व्यक्ति के जीवन और उद्देश्य की व्याख्या करना बहुत ही कठिन कार्य है। उसके कार्यों, उपलब्धियों, निराशाओं, खुशियों एवं कष्टों की विवेचना करना आसान कार्य नहीं है। डॉ. अम्बेडकर भी इन्हीं महान् व्यक्तियों में से एक है। आधुनिक भारत का निर्माण करने वालो में उनका प्रमुख स्थान है। वे आधुनिक भारत के असावधारण विद्वान, विधिवेता, समाज सुधारक, इतिहासकार, अर्थशास्त्री और वक्ता थे। इन सभी क्षेत्रों में उनके योगदान के अलावा उन्होंने समाज में अपेक्षित दलित वर्ग के लिए जो कार्य किए उसके लिए वे दलितों के 'मसीहा' बन गये।*

----------X----------

## प्रस्तावना

डॉ. अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश की महू छावनी में एक दलित महार परिवार में हुआ।

'महार' जाती को समाज में अछुत माना जाता था। डॉ. अम्बेडकर के पूर्वजों का गांव अम्बाबड़े था, जो रत्नगिरि जिसमें स्थित मन्डनगढ़ शहर से पाँच मील दूर था।

उनके दादा जी मालोजी सकपाल अवकाश प्राप्त सैनिक अधिकारी थे। डॉ. अम्बेडकर के पिता का नाम रामजी सकपाल और माता का नाम भीमाभाई था।

उनके जन्म के समय उनका नाम भीम सकपाल रखा। घर वाले उन्हें प्यार से 'भीवा' कहकर बुलाते थे। जब भीमराव 6 वर्ष के थे उनकी माता जी का देहान्त हो गया। वह स्वभाव से बहुत नेक स्त्री थी। उनकी मृत्यु से समस्त परिवार को गहरा आघात लगा। भीमराव बचपन से ही माता के लाड़–प्यार से वंचित रह गये। वे अपने पिछे तीन पुत्र और दो पुत्रियां छोड़ गई। भीमराव के दो भाई थे बलराम और आनंदराव! तुलसी और मंजुला उसकी दो बहने थी।

भीमराव के पिता जी फौज में नौकरी करते थे। वे दुसरी ग्रंनोडियर रेजीमेन्ट में मेजर थे। उन्हें यह पद फौजी स्कूल के हैडमास्टर होने के कारण प्राप्त हुआ था। वह बहुत संयमी और धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे। वे अपने बच्चों की उच्च शिक्षा के साथ–साथ उनका अध्यात्मिक विकास भी चाहते थे। इसलिए वह उन्हें धार्मिक गीत और धार्मिक कहानियां सुनाया करते थे। फलतः भीमराव के मन पर धार्मिक शिक्षा के संस्कारों की गहरी छाप थी भीमराव का परिवार कबीर पंथी था।

आनन्दराव तथा भीमराव को सतारा के कैम्प स्कूल में भर्ती करवाया गया। इसी बीच रामजी राव सकपाल का तबादला सतारा से गोरे गांव हो गया। रामजीराव सकपाल अकेले ही गोरेगांव चले गए।

जब सन् 1900 ई. में भीमराव का सतारा के हाई स्कूल में प्रथम कक्षा में दाखिला किया गया, तब स्कूल में उनका नाम 'भीमराव रामजी अम्बेडकर' लिखा गया। भीमराव को पढ़ाने अम्बेडकर उपनाम के एक ब्राह्मण अध्यापक थे। वह भीमराव से स्नेह करते थे। एक दिन उन्होंने कहां भीम! यह तेरा उपनाम अम्नावडेकर बोलने में बहुत कठिन है। मेरा अम्बेड़कर उपनाम इससे अच्छा है। तेरा भी आज से यही उपनाम है। इस तरह भीमराव अम्बावडेकर से अम्बेडकर बन गए।

अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए वे जून 1916 में लन्दन के लिए रवाना हुए। वहां उन्होंने कानून की पढ़ाई के लिए 'ग्रेजइन्न' तथा अर्थशास्त्र के अध्यापक के लिए 'लन्दन स्कूल आफ इक्नामिक्स एण्ड पालिटिकल साईंस' में प्रवेश लिया।

इसके बाद उन्होंने बैरिस्टर–एट–ला तथा एम.एस.सी. (अर्थशास्त्र) की उपाधियों को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने एम.ए.,एम.एस.सी, पीएच.डी., डी.एस.सी. व बार–एट–लॉ की उपाधियां प्राप्त की।

डॉ. अम्बेडकर ने अपना कैरियर प्रोफेसर के रूप में शुरू किया। वे बम्बई गवर्नमेन्ट लॉ कालेज के प्रोफेसर रहे। परन्तु उनकी अधिक रूची दलितोद्वार में थी। अर्थात् वे पद दलित एवं निम्न वर्गीय लोगों के उद्धार के लिए कार्य करना चाहते थे। परन्तु वे सरकारी नौकरी में रहकर ऐसा नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने जून 1924 में नौकरी छोड़कर बम्बई उच्च न्यायलय में वकालत शुरू कर दी।

डॉ. अम्बेडकर ने दलितोद्वार आन्दोलन का आरम्भ 20 जुलाई 1924 को 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना से किया।

डॉ. अम्बेडकर द्वारा चलाए गए दलित आन्दोलनों में 'महाड सत्याग्रह' का महत्वपूर्ण स्थान है । डॉ. अम्बेडकर और उनके साथियों ने पूना में चवदार तालाब पर पहुँचकर पानी पिया । इस पर सर्वण हिन्दू उन पर लाठियां लेकर टूट पड़े कि उन्होंने तालाब के पानी को अपिवत्र कर दिया । सवर्णों ने तालाब को 'शुद्ध' करने के लिए उसमें गोबर, गोमुत्र, दुध और

www.ignited.in

दही को डाला । डॉ. अम्बेडकर ने 20 मार्च 1927 को महाड़ में 15 हजार अछुतों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे ज्ञान अर्जित करे और सम्मान से जिये, ऊँच–नीच का भेद मिटाये तथा मुर्दा जानवरों को खाना छोड़ दे।

25 दिसम्बर 1927 को उन्होंने मनुस्मृति को जला दिया क्योंकि इसमें अछुतों व शुद्रो की निंदा की गई है। दूसरा सत्याग्रह कालाराम मन्दिर में प्रवेश हेतु 1930 में किया गया 'नासिक सत्यग्रह' था। 1931 में डॉ. अम्बेडकर गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन पहुँचे उन्होंने परिषद् में अछूतों को समानता का दर्जा देने की बात उठाई।

उन्होंने मांग की कि रियासतों के प्रतिनिधि जनता द्वारा चुने जाए ना कि मनमोनित हो। इसमें अछूतों को वोट देने व स्थान सुरक्षित करने की बात उठाई गई।

उन्होंने दलित समस्या की आजादी के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी भी उपस्थित थे। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर द्वारा रखी गई पृथक निर्वाचन मण्डल की मांग का विरोध किया। बाद में भारत आकर उन्होंने इसके विरूद्ध आमरण अनशन करने का ऐलान कर दिया। जब प्रधानमंत्री रेम्जे मेक्डोनाल्ड़ ने अछूतों को 1932 में 71 पृथक निर्वाचन मण्डल प्रधान कर दिए तो गांधी जी सचमुच अनशन पर बैठ गए। डॉ. अम्बेडकर को गांधी जी की जान बचाने के लिए झुकना पड़ा और इस प्रकार पूना पैक्त (24 सितम्बर 1932) पर सहमत होना पड़ा। इस प्रकार समझौते के अनुसार अछूतों को 71 पृथक सीटों की बताए 148 सुरक्षित स्थान मिले।

1935 में डॉ. अम्बेडकर के साथ एक दुःखद घटना घटी 27 मई 1935 को उनकी पत्नी रमाबाई का देहान्त हो गाया।

उन्हें बड़ा आघात लगा 13 अक्टूबर 1935 को येवला में एक दलित वर्ग सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 10 हजार लोग उपस्थित थे। इस सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर ने प्रभावशाली भाषण दिया। समाज में अछूतों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। उनका इन्होंने ह्रदयस्पर्शी वर्णन किया। उन्होंने अछूतों की दूर्दशा के लिए हिन्दू धर्म को जिम्मेवार ठहराया। उन्होंने कहा 'मैं हिन्दू धर्म में मरूँगा नहीं....सभी अछूत हिन्दू धर्म को छोड़कर ऐसा धर्म अपनाए जिसमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो।

परन्तु यह ध्यान देने योग्य है कि डॉ. अम्बेडकर ने यहाँ मात्र धर्म परिवर्तित करने की धमकी दी थी और धर्म परिवर्तित किया नहीं था वास्तव में वे स्वर्ण हिन्दुओं को झकझोरना चाहते थे कि वे अपना रवैया बदले और अछूतों के साथ भेदभाव करना बंद करें । परन्तु उनकी धमकी को ज्यादातर लोगों ने गम्भीरता से नहीं लिया और इसके गलत अर्थ निकाले।

डॉ. अम्बेडकर को 1942ई. को वायसराय लार्ड लिनलिथगो की एक्जीक्युजीटव कौसिल का सदस्य नियुक्त किया गया और डॉ. अम्बेडकर को श्रम विभाग सौपा गया। इस पद पर डॉ अम्बेडकर 3 वर्ष 11 माह 9 दिन तक रहे अर्थात् वे 1942 ई. से जुलाई 1946 ई. तक इस पद पर रहे।

9 सितम्बर 1945 ई. को डॉ. अम्बेडकर ने 'प्लेनरी लेबर परिषद्' के सामने औद्योगिकरण पर भाषण देते हुए कहा था कि 'पूंजीवादी संसदीय प्रजातन्त्र व्यवस्था में दो बाते आवश्यक होती है। जो काम करते है, उन्हें गरीबी में रहना पड़ता है तथा जो काम नहीं करते उनके पास अमापनिय पूंजी होती है।

डॉ. अम्बेडकर ने 4 जून 1944ई. को अपने कार्यकर्त्ताओं को कहा कि वे 'म्यूनिसिपल कामगार युनियन' नाम से अपना संगठन बनाए तथा अपना अध्यक्ष चुने। उस यूनियन के प्रथम अध्यक्ष 'रमेश जाधव' बने, जो नासिक के निवासी थे तथा लोक निर्माण विभाग में ठेकेदार थे।

डॉ. अम्बेडकर जब श्रम मंत्री थे तो लोक निर्माण विभाग भी उन्हीं के पास था, तब उन्होंने आदेश जारी किया, जिससे कोई भी ठेकेदार 500रूपये की जमानती रकम देने पर हजारों रूपये के ठेके ले सकता था। डॉ. अम्बेडकर के इस आदेश से दलित वर्ग के लोग छोटे–मोटे ठेकेदार बन गए।

डॉ. अम्बेडकर 7 जुलाई 1946ई. को संविधान सभा के लिए मुस्लिम लीग की सहायता से बंगाल विधान सभा द्वारा चुने गए ।

9 दिसम्बर 1946ई. को संविधान सभा की पहली बैठक हुई तथा 15 दिसम्बर 1946ई. को संविधान सभा में डॉ. अम्बेडकर का भाषण हुआ। उनके भाषण ने संविधान सभा के सभी सदस्यों को प्रभावित किया। मार्च 1947 में डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा के विचार के लिए एक ज्ञापन तैयार किया। यह ज्ञापन बाद में 'स्टेट्स एण्ड माइनार्टीज' के नाम से प्रकाशित हुआ।

इसमें कहा गया था कि दलितों को केवल उन क्षेत्रों में जिसमें सीट सुरक्षित है, पृथक चुनाव का अधिकार मिलना चाहिए तथा अन्य क्षेत्रों में दलित संयूक्त चुनाव में शामिल होंगे।

29 अप्रेल 1947ई. को संविधान सभा ने घोषणा की कि छुआछूत को खत्म किया जाए तथा यह भी कहा कि यदि किसी भी क्षेत्र में भेदभाव की भावना पाई गई तो कानूनी अपराध माना जाएगा

3 जून 1947ई. में वायसराय लार्ड मांउटबैटन ने भारत की स्वतन्त्रता के बारे में अपनी योजना प्रकाशित की। इस योजना के अनुसार 15 अगस्त 1947 ई. को भारत आजाद हुआ।

29 अगस्त 1947 ई. को डॉ. अम्बेडकर संविधान की प्रारूप–समिति के अध्यक्ष चुने गए। 26 नवम्बर 1949 ई. को संविधान पास कर दिया गया ।

उन्होंने 8 सुचियां और 315 धाराओं वाला संविधान तैयार किया। मन्दिर प्रवेश का हक डॉ. अम्बेडकर ने अछुतों को कानून द्वारा दिलाया, जिसके लिए वे पन्द्रह वर्ष से संघर्ष कर रहे थे। अतः 26 जनवरी 1950 को संविधान लागु किया गया।

डॉ. अम्बेडकर ने 14 अप्रेल 1948ई. को डॉ. शरदा कबीर (सविता) जो जाति से सारस्वत थी, से सिविल मैरिज ऐक्ट के अनुसार विवाह किया। दिल्ली के डिप्टी कमीशनर श्री रामेशवर दयाल, रजिस्ट्रार के रूप में शादी में सम्मिलित हुए। तत्पश्चात् डॉ. शरदा कबीर का नाम डॉ. सविता रखा गया।

संविधान पास होने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने अपना ध्यान हिन्दू कोड़ बिल पर केन्द्रित किया 5 फरवरी 1951 को डॉ. अम्बेडकर

www.ignited.in

ने संसद में हिन्दू कोड़ बिल पेश किया। बिल का लक्ष्य हिन्दू समाज के मुल ढांचे को बदलना और उसे उद्धार बनाना था, जिससे कि वह आधुनिक युग के अनुकूल हो सके। इस बिल को पास कराने में कांग्रेसी सदस्यों ने सहायता नहीं की इसका विरोध किया, जिस कारण डॉ. अम्बेडकर ने निराश होकर 27 सितम्बर 1951 को मंत्रीमंडल से त्याग पत्र दे दिया, लेकिन प्रधानमंत्री नेहरू के कहने पर वे 11 अक्तूबर 1951ई. तक अपने पद पर ही कार्य करते रहे।

डॉ. अम्बेडकर मार्च 1952ई. में बम्बई की और से राज्य सभा के सदस्य चुने गए । मई 1954 में जब नागपुर से लोकसभा सीट के लिए उपचुनाव हुए तब इसमें डॉ. अम्बेडकर हार गए ।

डॉ. अम्बेडकर ने 1945ई. में 'पिपल्ज एजूकेशन सोसाईटी' की स्थापना की थी, जिसने 1 सितम्बर 1950 को मिंलिद महाविद्यालय, औरंगाबाद तथा 1953 ई. में सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकानॉमिक्स, बम्बई की स्थापना की ।

सोलह वर्ष पहले डॉ. अम्बेडकर ने अंग्रेजी में 'बुद्धा एण्ड हिज धम्मा' नामक ग्रंथ लिखना शुरू किया था। लिखना शुरू करते थे लेकिन सन्तोष नहीं होता था काट देते थे, फिल लिखते, फिर काट देते थे बीच में डॉ. अम्बेडकर के कई ग्रन्थ प्रकाशित हुए, लेकिन बुद्धा एण्ड हिज धम्मा की पांडूलिपि में कांट छांट ही होती रही। आखिर ग्रंथ पूण हुआ।

बुधवार 5 दिसम्बर 1956ई. को रात में बुद्धा एण्ड हिज धम्मा की भूमिका लिखकर पूर्ण करने के बाद डॉ. अम्बेडकर सुख की नींद सो गए।

गुरूवार 6 दिसम्बर 1956ई. को सुबह पता चला कि डॉ. अम्बेडकर को निद्रावस्था में ही देहान्त हो गया।

डॉ. अम्बेडकर का पार्थिव शरीर दिल्ली से बम्बई ले जाया गया शुक्रवार 7 दिसम्बर 1956ई. को दोपहर को दो बजे डॉ. अम्बेडकर महापरिनिर्वाण यात्रा उनके आवास राजगृह से शुरू हुई। इस महायात्रा में लगभग 10 लाख लोग शामिल हुए। उनकी तीन मील लम्बी शव यात्रा साढे पांच बजे शिवाजी पार्क को चौपाटी पर पहुँची 7 बजकर 20 मिनट पर डॉ. अम्बेडकर के एकमात्र पुत्र यशवन्त राव अम्बेडकर ने अग्नि–संस्कर किया। उनकी मृत्यु के बाद एक वर्ष में लगभग 25 लाख दलित लोग बौद्ध हो गए।

## संदर्भ ग्रंथ

धनज्य कीर, डॉ. अम्बेडकर : लाईफ एण्ड मिशन, पृ. 8

विश्व प्रकाश गुप्त व मोहिनी गुप्ता, डॉ. भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, पृ. 36

डी.सी. डीन्कर, डॉ. अम्बेडकर स्मृति ग्रंथ, पृ. 13

वसन्त मुन, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर, पृ. 2

डी.आर. जाटव, डॉ. अम्बेडकर का नैतिक दर्शन, पृ. 2

डी.आर. निम, अम्बेडकर जीवन दर्शन, पृ. 13

डी.सी. डिन्कर, पूर्व उद्धत, पृ. 13–20

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यापन, यदि बाका न होते, पृ. 6

डब्ल्यू. एन. कुबेर, आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. अम्बेडकर, पृ. 8

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन, पूर्व उद्धत, पृ. 7

धनन्जय कीर पूर्व उद्धत, पृ. 31–32

विश्व प्रकाश गुप्त मोहिनी गुप्त, पूर्व उद्धत, पृ. 185

बी.आर. सांपला, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर, पृ. 68

विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्ता, पूर्व उद्धत, पृ. 61

विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्ता, पूर्व उद्धत, पृ. 187

राजमल सिंह राज, भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर, पृ. 76

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर, डॉ. अम्बेडकर चिन्त और विचार, पृ. 106

विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्ता, पूर्व उद्धत, पृ. 187

**Corresponding Author**

**Devender Kumar***

Research Scholar, VPO-PUR, Bhiwani

**E-Mail –** kdevender701@gmail.com